INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2019 Special Issue – 200

Cotemporary Problems in India and Remidies

Guest Editor :
Dr. R. V. Shikhare
Principal
R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -
Mr. H. B. Helambe
Mr. B. S. Jogdand
Mr. R. B. Kale
Mr. S. S. Nagare
Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

31	Temporal Analysis of Vegetation by Vegetation Indices from Multi Dates Satellite Images : Application to Dindori Tahsil, Nashik District, Maharashtra.	**Sitaram Nikam & Dr. D. S Gajhans**	131
32	East-West Cultural Encounter in Chitra Bangerjee's Novel Oleander Girl	**Mr. Satish Funne**	136
33	Problems of Rural Migration in India	**Mr. B. S. Jogdand**	140
34	White Collar Crime in India	**Mr. Bandu Patekar**	143
35	Poverty in India	**Mr. Ganesh Walunj & Dr. Suhas Avhad**	146
36	Causes of Poverty and Remedies in Contemporary India	**Prof. Dattatraya Mundhe**	150
37	An Approach towards Social Security	**R. J. Gaikwad**	153
38	Sports Medicine in Human Health by Environment Provocation	**Ravindra Kharat**	156
39	Child Labour in Brick Kiln Industries	**Shaikh Jahara Abdul Rahim**	158
40	Main Causes of Economic Inequality in India	**Mr. Vaibhav Shendage**	162
41	Naxalism in India : A Revolution of Displaced Tribal People for Social Justice	**Shesherao Rathod**	166
42	Poverty in An Unorganised Sector	**Dr. Sonal Ubale**	170
43	Corruption : A Contemporary Problem in India	**Subhash Pole**	173
44	Modernization Beacon throughout Renovaton Task : Development in Literature Dissection	**Uday Kharat**	176
	हिंदी विभाग		
45	भक्षक एकांकी और पर्यावरण समस्या	**डॉ. संदिप बनसोडे, रामेश्वर देवरे**	178
46	भारत मे आतंकवाद की समस्या	**दीपक डोंगरे**	181
47	रचनात्मक विकास मे निरक्षरता बाधक नही	**प्रा. दीप्ती होळकर**	184
48	कान्हा कोयला क्षेत्र मे कार्यरत श्रमिको का जीवन स्तर 'जिला छिंदवाडा के संदर्भ मे	**डॉ. शशि बाला भट्ट**	189
49	भारतीय नारी – सामाजिक शोषण (कहानी विशेष)	**डॉ. अरविंद घोडके**	198
50	भारत की निर्धनता : रणनीतियाँ और कार्यक्रम	**डॉ. जे.एस.धायगुडे**	200
51	प्रेमचंद के उपन्यासो में विधवा नारी की समस्या	**डॉ. संगीता आहेर**	208
52	समकालीन हिंदी ग़ज़लो में चित्रित सामाजिक समस्याएँ	**डॉ. सय्यद शौकत अली**	211
53	समकालीन हिंदी ग़ज़ल में पूँजीवाद	**डॉ. रजनी शिखरे**	216
54	भारतीय साहित्य में सामाजिक समस्याएँ (मध्यकालीन संत साहित्य के विशेष संदर्भ में)	**डॉ. ललिता राठोड**	219
55	हिंदी ग़ज़ल में जीवनमूल्य	**डॉ. रजनी शिखरे**	222
56	हिंदी साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ	**डॉ. रजनी शिखरे, एच. टी. पोट कुले**	225
57	भारत में भ्रष्ट्राचार की समस्या	**डॉ. आर.के. देशमुख**	229
58	भ्रष्ट्राचार	**महादेव करडे**	233
59	सामाजिक विकास पर पर्यावारणीय प्रभाव	**किरण पवार, कविता जोशी**	239
60	हिंदी ग़ज़ल में आर्थिक समस्या	**डॉ. रजनी शिखरे, डॉ. मनोजकुमार ठोसर**	243
61	प्रकृति सौंदर्य के कवि : केदारनाथ अग्रवाल	**संतोष नागरे**	246
62	दलित साहित्य में समाजिक समस्याएँ (अनुदित आत्मकथा के संदर्भ में)	**डॉ. रजनी शिखरे, राजाराम जाधव**	251
63	भारत में आतंकवाद की समस्या	**डॉ. रमेश व्ही.मोरे**	255
64	वैश्विकरण की आंधी में दरकते संस्कार : सिसकते वृद्ध दिमर्श पर एक दृष्टि	**ऋचा राय**	257

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 200 : Contemporary Problems in India and Remidies
ISSN : 2348-7143
October-2019

दलित साहित्य में व्यक्त सामाजिक समस्याएँ (अनूदित आत्मकथा के संदर्भ में)

डॉ. रजनी शिखरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
र.भ.अट्टल महाविद्यालय गेवराई,
जि. बीड, (महाराष्ट्र)

शोधछात्र
प्रा. राजाराम बाबासाहेब जाधव
श्री सिद्धेश्वर कनिष्ठ महाविद्यालय माजलगाव जि.बीड
Email- rajaramjadhav2803@gmail.com

साहित्य समाज का दर्पण है समाज का प्रतिबिम्ब हम साहित्य के माध्यम से देख सकते है। साहित्य समाज का मार्गदर्शक बनता है। समाज में घटित सभी अच्छी -बुरी बातों का लेखा- जोखा साहित्य में साहित्यकारों दवारा वर्णित होता है जिसके अच्छे-बुरे परिणाम जनमानस तक पहूँच जाते है। साहित्य के माध्यम से तत्कालिन समय की परिस्थितियाँ रहन-सहन,खान-पान एवं अन्य गतिविधियों का पता चलता है। समाजद्वारा साहित्य प्रभावित होता है और साहित्य समाज पर प्रभाव डालता हुआ नजर आता है । इसलिए साहित्य और समाज का संबंध शरीर और आत्मा के संबंध की तरह है। दोंनों एक ही सिक्के के दो पहलू है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त लिखते है कि केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए, उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए। साहित्य के माध्यम से समाज अर्थात मनुष्य का हीत ही हेाता है। साहित्यकार समाज में फैली कुरीतियों,विसंगतियों, विकृतियों ,अभावों ,विषमताओं, आदि को अपनी कलम के द्वारा वर्णित कर- कर जनमानस को जागरूक करने का कार्य करता है। एक अर्थ से साहित्य मनुष्य का हीत ही करता है। भारतीय साहित्य में दलित साहित्य का निर्माण भी जनमानस को जागरुक करने के लिए ही हुआ है।

मराठी भाषा में दलित साहित्यः-

साहित्य के क्षेत्र में दलित साहित्य का प्रारंभ सर्वप्रथम मराठी भाषा में ही हुआ। दलित साहित्य लेखन की एक दीर्घ परंपरा मराठी साहित्य में दिखाई देती है । कुछ विद्वान संत साहित्य को दलित साहित्य का उमगस्थान मानते है। चोखा मेळा जैसे जाति के महार संत अस्पृश्यों की वेदना को व्यक्त करते हुए लिखते है ,कि

"हीन याती माझी देवा । कैसी घडे तुझी सेवा
मज दूर-दूर हो म्हणती । तुज भेटू कवण्या रीती
माझ्या लागताची कर । सिंतोडा घेताती करार
माझ्या गोविंदा गोपाळा । करुणा भाकी चोखा-मेळा" १

चोखा-मेळा सामाजिक अन्याय का वर्णन करते दिखाई देते है। पर इस अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करने की शक्ति उनमें दिखाई नही ं देती । प्राचिनकाल से दलितों पर अन्याय और अत्याचार होते आये है। दलितों ने भी उन अत्याचारों अपने पूर्वजन्म का पाप समझ कर सह लिया। किसी ने भी तीव्रता से इस अन्यास और अत्याचार का विरोध नहीं किया। आधुनिक काल में महात्मा गौतम बुद्ध ,छत्रपति शिवाजी महाराज,महात्मा ज्योतिबा फुले,संत कबीर की प्रेरणा से डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने अन्याय के विरुद्ध विद्रोह किया । हजारों सालों से मूक अन्याय सहती जनता को जागरुक कर-कर उनमें चेतना निर्माण करने का महान कार्य किया । जिस कारण दलित लोग अपने पर हुए अन्याय और अत्याचार से परिचित हो गए, और उसका विरोध करने लगे। कुछ पढे लिखे लोंगो ने अपनी कलम के द्वारा दलितों की वेदना को शब्दबदध किया। सन १९५० से सही मायने में दलित साहित्य अंकुरित हूआ। आज उस अंकुर का विशाल

वृक्ष हम देख सकते है। दलित साहित्य वेदना का साहित्य है। इसमें दु:ख,दर्द,करुणा का वर्णन हुआ है साथ ही साथ अन्याय और अत्याचार की परिसीमा का वर्णन एवं उसके विरुद्ध विद्रोह भी देखने को मिलता है। दलित साहित्यकारों ने दलित समाज में फैली सामाजिक,कुरीतियाँ अंधविश्वास,अस्पृश्यता,उच्च नीचता जैसी सामाजिक समस्याओं का वर्णन किया है। हम यहाँ मराठी दलित आत्मकथा साहित्य में वर्णित सामाजिक समस्याओं को उजागर कर रहे है।

सामाजिक समस्याएँ :-

अंधविश्वास :- भारतीय समाज व्यवस्था को धर्म इस तत्व से संचालित किया जाता है। लोंगों का यह विश्वास है कि प्रत्येक सुख-दु:ख का निर्माता ईश्वर ही है । दर्शनशास्त्र इसे ईश्वरवाद मानता है। पर विज्ञान इसे अंधविश्वास मानता है। लोंगों में फैला अंधविश्वास,अशिक्षा,अज्ञान के कारण है। शहरों की अपेक्षा गाँव में ज्यादा अंधविश्वास देखने को मिलता है,इसका कारण अभी भी शिक्षा का स्तर सौं प्रतिशत गाँव तक नहीं पहूँच पाया । इस संदर्भ में विवेकीराय लिखते है कि," गाँवों को अंधविश्वासों से काटकर यदि पृथक कर दिया जाए तो वह गाँव ही नहीं रह जाता है। गाँव का अर्थ है विश्वास और शताब्दियों का यह विश्वास अंधकाराविष्ट रहा है। अत: अंधविश्वास होकर उसके साथ इस प्रकार जुड गया है कि अनिवार्य अंग हो गया है ।"२ भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु अंधविश्वास को सभी समस्या का मूल कारण मानते हुए लिखते है कि, "भारत की अधिकांश सामाजिक समस्याएँ जैसे जाति-पाँति ,दहेज-प्रथा, सांप्रदायिकता ,बालविवाह, आदि के पीछे मूल कारण अंधविश्वास एवं रुढियों का आँखे मूंदकर पालन करना ही है।"३ भारतीय दलित समाज में बीमारी हटाने के लिए मनोकामना पूर्ति के लिए संकट से मुक्ति पाने के लिए, भूत-पिशाच्च के संबंध में, मंत्र-तंत्र ,झाड-फूँक,जडी-बूटी, जादू-टोना,शुभअशूभ, पाप-पुण्य संबंधी भ्रामक कल्पानाएँ अंधविश्वास के कारण मन में घर कर-कर बैठी है।

अछुत में दया पवार की माँ समाधि की पूजा करती है। समाधि के खिलाफ बोलना उसे पसंद नहीं वह कहती है कि, "अरे, यह बाबा हमारा पूर्वज ! कहते है,सन्यासी था । अनेक तीर्थ घूमा हुआ । मरते समय माँ पांढरी पर आकर मरा। उसी की यह समाधि है हमारा घर पर उसी की छत्रछाया है। यदि वर नाराज हो गया तो अपने घर का सत्यानाश हो जाएगा। "४ देवी देवताओं पर दलितों का अत्यंत विश्वास है। उनके शरीर में देवी देवता विराजते है। इस संदर्भ में बेबी कांबले लिखती है कि,"अपने कुल का नाम रोशन करने के लिए कुछ तो करना ही पडता है। बडे-बडे भी बता है कि इस तरह के कडक देवता को शरीर में लाने के लिए माँ-बाप के पुण्य काम आते है वरना हर ऐरे-गैरे के बस की यह बात नहीं है। .....जेवुर मांडकी में मेरी ससुराल है। वहाँ भी कमर जितना मंदिर है। वहाँ एक आदमी के शरीर में स्वयं बेताल आते है। वे इतने पवित्र है कि रजस्वला औरतों की परछाई तक से दूर रहते है।और जालिम इतना की मूठ मार देता है। जिसे भी वह मूठ मारता है,उसे खून की उल्टी हो जाती है और वह तुरंत मर जाता है। ऐसा वहाँ गाँव -गाँव में प्रचलित है। "५ भूत प्रेत पर विश्वास के संबंध में दादासाहेब मोरे लिखते है कि,"अरे.... मैं ....यहाँ का भूत हूँ ...कडी धूप में तुम मेरी सीमा में से जा रहे हो ....निश्चय ही मुझे समय पर मिल गया है... मैं इसे नहीं छोडूंगा...। " तब गंगू मौसी से मारुती मामा बुडे पांडूरंग वायफळकर को छोड देने को कहते है तो गंगु मौसी चिखते हुए कहती है कि, "मुझे छुडवाना हो तो .....एक मुर्गी .....पाँच चपाती....एक नारीयल चावल और नींबू आज शाम को पहूँचने पर तुम मेरे नाम पर... इस रास्ते की ओर मुँह करके निछावर करना ...तभी मैं जानेवाला हूँ ...वरना इसे अपने साथ ले जानेवाला हूँ.... ।"६

उपर्युक्त विवेचन को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि दलित लोग अज्ञान,अशिक्षित,अंधश्रद्धाळु,नये वैज्ञानिक विचारों से दूर, धर्म जाति, देवी देवता साधू-महंत,भगत, मांत्रिक आदि के कारण अंधविश्वासी बने हुए है। अंधविश्वास के कारण दलितों का शोषण होता हुआ आज भी हम वैज्ञानिक युग में देख रहे है।

जातीय भेदाभेद की समस्या:-

भारतीय समाज व्यवस्था में धर्म के साथ-साथ जाति एवं गोत्र को विशष महत्व दिया है। लोग अपनी जाति सुरक्षित रखना चाहते है परिणामत: जातिय भेदा-भेद की समस्या निर्माण हुई है। इस संदर्भ में डॉ.देवेश ठाकुर लिखते है

कि, "एक ओर राष्ट्रीयता के भावना से प्रेरित भारतीय समाज एक स्वर में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उठ खडा हुआ था और दूसरी ओर स्वयं नगर ही नहीं ग्राम्य और ऑचलिक स्तर पर भी जातिवाद का विषबीज विकास पा रहा था जिससे व्यक्ति-व्यक्ति के बीच मतभेद की खाई गहरी हो रही थी और व्यक्ति समाज जातिगत आधार पर अलग-अलग समूहों में विभाजित और विछन्न होकर परस्पर द्वेष,ईर्ष्या,और शत्रुता के भाव को बढाता हुआ राष्ट्रीय शक्ति,एकता और उदात्त मानवीयता के आदर्शों को धूमिल कर रहा था।"७ इस मत से भारतीय जातियता का स्वरुप स्पष्ट हो जाता है।

जातिय भेदाभेद का समस्या बहुत बुरा अनुभव दलित समाज को भुगतना पडा। जानवरों से भी बदत्तर व्यवहार दलितों के साथकथित सवर्ण ने किया है। सवर्ण दलितों की ओर तुच्छ दृष्टि से देखते थे। उनका स्पर्श भी सवर्णों को स्विकार नहीं था। सवर्ण दलितों की छाया से तक बचते थे। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर जैसे महापुरुषों को इन अअनुभवों के कारण ये घोषणा करनी पडी कि मैंने हिंदु धर्म में जन्म लिया । किस धर्म में जन्म लेना चाहिए यह मनुष्य के बस की बात नहीं। पर मैं हिंदु धर्म में नही ं मरुँगा। उन्होंने हजारों अनुयायों के साथ बौद्ध धर्म स्विकार किया। दलित आत्मकथाकारों ने उन्हे स्पृश्य-अस्पृश्यता के आये अनुभवों को पन्ने-पन्ने पर रेखांकित किया है।

अज्ञान कि समस्या :-

अज्ञान या अशिक्षा सभी समस्याओं की जड़ है ,ऐसा महात्मा फुले कहते है। भारतीय समाज में शुद्र और नारी को शिक्षा का अधिकार नहीं था। इस कारण दलितों को सवर्णों ने पाठशाला में प्रवेश ही नहीं लेने दिया। ऐसे अज्ञानी समाज को शिक्षा लेने का संदेश डॉ.आंबेडकरजी ने दिया। जिस कारण आज का दलित युवक शिक्षित होकर अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो रहा है।

हजारों साल अज्ञान में रहने के कारण गरीबी का साम्राज्य दलितों के चारों ओर फैला हुआ है। शिक्षा के प्रति भीमराव गस्ती के माँ के विचार देखिए" इकलोता एक छोकरा है, हमारा ! और ओ मास्टर, सुनती हूं कि छोरान को ढेर मारा करे है! ये छोरा हक-नाहक मर जाईगा तो....?८ लडकियों को तो स्कुल में भेजना ही नही चाहिए ऐसी सोच उस वक्त प्रचलित है। भीमराव गस्ती की माँ लेखक की तख्ती टुट जाने पर आक्का और फकी को कहती है कि,नासपीटियों ! बोलो, क्यों हाथ में ली ,तुमने ओ तख्ती? कडकती आवाज में उसने जवाब तलब करना शुरु किया, बोलो तुमको कायको चैए,इस्कूल-उस्कूल? तुम ठैरी खा-पीकर दुल्हे के घर फुर्र से उड़ जानेवाली चीड़ माटिमिली! नासपीटिए ...।"९ प्र.ई.सोनकांबले के मन में शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा थी। बस्ती के लोग कहते थे कि "अनाथ है,फिर भी पढाई का भूत सवार है। बेवकुफ स्साला ! "१० इस प्रकार की शिक्षा के प्रति सोच दलित लोगों ही होती थी । इसलिए अन्याय और अत्याचारों को उन्हे हजारों साल भुगतना पडा।

शोषण की समस्या : -

भारतीय समाज में जातिव्यवस्था को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। जातिय व्यवस्था के कारण समाज में एकता का दर्शन नहीं होता। वर्तमान समाज में भी उँच नीच,सवर्ण दलित भेदाभेद देखने को मिलते है। इसके कारण ही शोषण की समस्या दिन-भर दिन सम्मुख आ रही है। इस संदर्भ में डॉ.बलवन्त साधू जाधव लिखते है, कि "भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था में शक्ति और धन के आधार पर सवर्णों को इज्जत,सम्मान,प्रतिष्ठा के अधिकारी बनाया है। ग्रामों में तो दलित युवतियाँ उनके पंजे में फसकर उनके विलास की सामग्री बनती है।"११ दलितों के होनेवाले शोषण पर यह कथन प्रकाश डालता है। तराल-अंतराल में शंकरराव खरात अपने पिताजी के शोषण के संदर्भ में लिखते है कि अपनी बहन की मृत्यु का समाचार जिस पत्र में आया था मास्टर उसे पढने के बदले पिताजी से लडकियाँ फाडकर लेता है। यहाँ दलितों का शोषण हमें दिखाई देता है। सभी आत्मकथाओं में इस शोषण की समस्या को उजागर किया है।

दलित पुरुषों के साथ-साथ दलित नारी का शोषण भी होता था। पराया में एक औरत पर गाँव के कुछ गुण्डागर्दी करनेवालों ने उठाकर ले जाकर बलात्कार किया। अपने उपर हुए जुल्म एवं दुख को व्यक्त करती हुई वह कहती है कि

"बहुत जुल्म हो गया रे। बाबा अब क्या करुँ कहकर रोने लगी। बहुत वेदना सही....दरिंदो ने नही छोडा। शरीर का चिथडा कर दिया।"१२ सिर्फ सवर्ण पुरुषों द्वारा अन्याय और अत्याचार नारी पर होता था ऐसा नहीं तो परिवार और स्वाजाति के लोगों के द्वारा भी नारी अत्याचार सहती दिखाई देती है। इसका वर्णन आत्मकथाओं में दिखाई देता है।

पूलिस लोगों की रक्षा के लिए है। पर दलित समाज के लोगों पर पुलिसों द्वारा अन्याय और अत्याचार का वर्णन आत्मकथा में दिखाई देता है। कहीं भी चोरी हो गयी तो पूलिस उचक्का समाज के सभी-पुरुषों पर अत्याचार करते है इसका वर्णन लक्ष्मण गायकवाड ने अपनी आत्मकथा में किया है।

व्यसनाधिनता : -

व्यवसनाधिनता से संपूर्ण दलित समाज व्याप्त है। शराब के लिए पुरुष अपनी पत्नी को तक बेचने के लिए तैयार रहता है । बिमारी हट जाने के लिए शराब पिलाई जाती है। शराब पीने से बीमार नही पडेंगे ऐसा विश्वास दलितों में दिखाई देता है। शादी से पहले दामाद को ससुराल वाले शराब पिलाते है। इसका वर्णन लक्ष्मण गायकवाड करते है। पिता की मृत्यू के बाद भी शोक कम करने के लिए लडकों को उचक्का समाज में शराब पिलाई जाती है। इस व्यसनाधिनता के कारण गरीबी दलितों को पिछा नहीं छोड पायी है जिसका वर्णन आत्मकथा में आया है ।

अत: हम कह सकते है कि मराठी दलित आत्मकथाकारों ने दलित समाज की व्यथा वेदना को रेखांकित करने कि कोशिश की है। समाज में फैला अंधविश्वास रुढी-परंपरा, शिक्षा के प्रति अज्ञान,भूत-प्रेत पर विश्वास, ईश्वर के प्रति अंधविश्वास , दलित स्त्री पुरुषों का सवर्णो द्वारा शोषण,व्यसनाधिनता आदि सामाजिक समस्याओं को अपनी आत्मकथा में उजागर कर-कर उससे लोगों को सचेत करने की कोशिश की। एक प्रकार से समाज को अपने पीछडेपन का आयना दिखाने में ये साहित्य सफल हुआ है। ऐसा हम कह सकते है।

संदर्भ :-

१. दलित साहित्य : वेदना आणि विद्रोह - डॉ.भालचंद्र फडके पृ.सं.३८
२. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य और ग्रामजीवन-विवेकीराय,लोकभारती प्रकाश पृ.२७१
३. आधुनिक भारत के निर्माता पंडित जवाहरलाल नेहरु-रामलाल विवेक,श्याम प्रकाश पृ.सं.१३६
४. अछुत - दया पवार पृ.सं.६९
५. जीवन हमारा - बेबी कांबले-पृ.सं.२०
६. डेराडंगर-दादासाहब मोरे-पृ.सं.२३
७. मैला आंचल की रचना प्रक्रिया -डॉ.देवेश ठाकुर(वाणी प्रकाशन)पृ.सं.६८
८. बेरड-भीमराव गस्ती-पृ.सं.२.३
९. बेरड-भीमराव गस्ती-पृ.सं.४
१०. यादों के पंछी- प्र.ई.सोनकांबले पृ.सं.६१
११. प्रेमचंद साहित्य में दलित चेतना -डॉ.बलवन्त साधू जाधव पृ.सं.१८३
१२. पराया -लक्ष्मण माने पृ.सं.४२